भारत-भारती में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति

डा० शिखा तिवारी (प्रिंसिपल)
टी. जान कालेज, बैंगलोर

सार-

किसी भी देश की समृद्ध्ता की पहचान में उसकी सांस्कृतिक विरासत का अत्यंत महत्व है और सांस्कृतिक विरासत बिना भाषा के अधूरी है क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है ।हमें सदैव अपनी विशाल सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व रहा है यद्यपि देश, काल एवं वातावरण के अनुसार समय-समय पर इसमें परिवर्तन होता रहा है । हमारी अमूल्य संस्कृति जो हमें वैदिक काल से ही प्राप्त हुई है जिसके कारण हम पूरे विश्व को समय-समय पर ज्ञान-विज्ञान , धर्म व नैतिकता का पाठ पढ़ाते रहे हैं । हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के बारे में अपने साहित्य से ही पता चलता है शायद इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है । इतिहास के विभिन्न घटना चक्रों के कारण इसका अवमूल्यन भी होता रहा है । विभिन्न साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति को अपनी-अपनी शैली में अभिव्यक्त किया है । वास्तव में हमें विभिन्न साहित्यकारों की अभिव्यक्ति से ही भारतीय संस्कृति के बारे में पता चलता है ।यहाँ मैंने तत्कालीन भारतीय संस्कृति की दशा के बारे में जानने के लिए राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत-भारती को चुना है ।

सहायक शब्द-

समृद्ध्ता , सांस्कृतिक धरोहर, साहित्य , अमूल्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति, अभिव्यक्ति

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की समस्त रचनाओं में निश्चित रूप से भारत-भारती सर्वश्रेष्ठ है । इसी रचना के द्वारा कवि जन-मन के प्राणों में बस गए और राष्ट्रकवि की पदवी को सुशोभित किया । यह रचना स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान की दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग है । अतीत के गौरव, गरिमा और समृद्धि का गुणगान करने वाली यह रचना किसी शोध ग्रंथ से कम नहीं । गुप्त जी की लेखन शैली का लोहा मनवाने वाली यह कृति अनेकों सामाजिक आयामों पर सोचने-विचारने को विवश करती है । आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में भारत-भारती सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज रहा है ।
मंगलाचरण से ही कवि ने भारत और भारती के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने की कामना प्रस्तुत की है -

मानस-भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती ।
भगवान ! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती ॥

अपने देश के गौरव और संस्कृति का गुणगान करने वाली यह रचना अपनी वर्तमान दशा को देखकर दुःखी और द्रवित है । हमारे दुःख, क्लेश, ग्लानि और पराधीनता के अपमान और कलंक को दूर करने का सहज उपाय है, अपनी गरिमा, प्रतिष्ठा, गौरव और आदर्शों का स्वयं को स्मरण कराना, स्वयं को याद दिलाना कि-

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी ,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ।

जब तक समाज, समाज के लोग अपनी समस्याओं पर विचार नहीं करेंगे तब तक वे कदापि अपने कल्याण की ओर अग्रसर नहीं हो सकेंगे । इसी विचार को अपनी रचना का आधार बनाकर कवि मैथलीशरण गुप्त जी ने भारत-भारती की रचना की और भारत के अतीत गौरव से सजी भारत-भारती भारतीय संस्कृति की अमर कृति बन गई । भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पुरातनता का बखान इस प्रकार किया गया –

हाँ, वृद्ध भारत ही संसार का सिर मौर है ,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?

*- *- -* -*

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं ,
विद्या कला-कौशल्य सबके जो प्रथम आचार्य हैं ।

हमारे पूर्वज और उनकी कीर्ति अपार है । वे अपने शरीर को तृण के समान तुच्छ समझकर अपने प्राण न्योछावर करते थे । उनके उपदेश मन को शांति देने वाले तथा शोक निवारक थे । वे सुख और दुख में समान रूप से सजग रहते थे और शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते थे –

वे मोहबंधन मुक्त थे स्वछंद थे, स्वाधीन थे ,
संपूर्ण सुख-संयुक्त थे वे शांति शिखरासीन थे ।

भारतीय संस्कृति की नींव उसके "आदर्शों" पर टिकी है । भारत-भारती में उन्हीं आदर्शों का जोर-शोर से गुणगान किया गया है –

"आदर्श जन संसार में इतने कहाँ पर हैं हुए ?
सत्कार्य भूषण, आर्य-गण जितने यहाँ पर हैं हुए"।

गौतम और वशिष्ठ जैसे ज्ञानी मनु और याज्ञवल्क्य के समान विधि-विधायक, वाल्मीकि और वेद-व्यास जैसे कवि तथा पृथु, पुरु, भरत, रघु से अलौकिक नायक अन्य कहाँ मिलेंगे ? इन्होंने उन आदर्शों की स्थापना की है जो –

"लक्ष्मी नहीं सर्वस्व जावे , सत्य छोड़ेंगे नहीं"

अपने आदर्शों का पालन करके अपने जीवन का सर्वस्व न्योछावर करने वाले धर्म-परायण लोगों ने जन्म लेकर इस पवित्र भारत-भूमि को गौरवान्वित किया । शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि जैसे दानी, भरत जैसे भाई, प्रह्लाद , कुश-लव, अभिमन्यु जैसे बालक इस भारत-भूमि पर जन्म लेकर नए आदर्शों की स्थापना कर गए । भारत की नारियाँ अपने चरित्र, साहस, सहनशीलता, विद्वता में कभी पुरुषों से कम नहीं रहीं । अपने धर्म तथा मर्यादा की रक्षा के लिए कठिन से कठिन कष्ट को भी हँसकर सहन कर गईं । आर्य स्त्रियों के पातिवृत्य की कहानियाँ अनगिनत हैं –

मूँदे रहीं दोंनो नयन आमरण गांधारी जहाँ ,
पति-संग "दमयंती" स्वयं वन-वन फिरी मारी जहाँ ।
अवला जनों का आत्म-बल संसार में वह था नया ,
चाहा उन्होंने तो अधिक क्या, रवि उदय भी रुक गया ॥

ऐसी आर्य नारियाँ भारतीय सभ्यता और संस्कृति की संरक्षिका और पोषिका थीं ।

हमारी सभ्यता का गुणगान भारत-भारती की विशेषता है । जब संसार सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा है उस समय़ भारत की सभ्यता अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी । भारत 'जगत गुरु' के सिंहासन पर विराजमान था । भारत संपूर्ण विश्व को आचार-विचार , व्यवहार, व्यापर और विज्ञान की सीख दे रहा था । हम परमार्थ में विश्वास रखते थे , स्वार्थ में नहीं । 'आत्मा अमर और देह नश्वर' यही हमारा अटल सिद्धांत था । हम दूसरों की संपत्ति का हरण नहीं अपितु उनकी रक्षा करते थे । हम आश्रम व्यवस्था को मानते थे तथा पृथ्वी और आकाश के रहस्यों के भी ज्ञाता थे । ईश्वर के अतिरिक्त हमारा मस्तक किसी के भी आगे नहीं झुकता था । हम किसी कार्य को आरंभ कर उसे उसके परिणाम तक पहुँचाते थे । संपूर्ण संसार को ज्ञान-विज्ञान, दर्शन और साहित्य की समझ भारत से ही प्राप्त हुई-

जयपाणि जो वर्द्धक हुआ है , एशिया के हर्ष का ,
है शिष्य वह जापान भी इस वृद्ध भारत वर्ष का ।
- *- -* -
है आज पश्चिम में प्रभा जो पूर्व से ही है गई ,
हरते अँधेरा यदि न हम, होती न खोज नई-नई ।

हम वेद, काकोवाक्य-विद्या, ब्रह्म-विद्या, नक्षत्र-विद्या, निधि नीति-विद्या, राशि- विद्या आदि के ज्ञाता थे । हमारी विद्या और बुद्धि का चारों ओर बोलबाला था –

जिसकी प्रभा के सामने रवि-तेज भी फीका पड़ा ,
आध्यात्म विद्या का यहाँ आलोक फैला है बड़ा ।

यह बात पूर्णता सिद्ध हो चुकी है कि वैदिक साहित्य इस विश्व का प्राचीनतम साहित्य है । वेदों ने ही ज्ञान का आलोक सारे संसार में फैलाया है । उपनिषद, सूत्र ग्रंथ, दर्शन, गीता, धर्मशास्त्र, नीति, ज्योतिष, अंकगणित, रेखागणित, सामुद्रिक और फलित ज्योतिष, भाषा और व्याकरण, वैद्यक इन सभी विद्याओं का जनक भारत ही रहा है । पाणिनी के समान वैयाकरण इस संसार में अन्य कौन हो सकता है –

प्राचीन ही जो है न, जिससे अन्य भाषाएँ बनीं ;
भाषा हमारी देववाणी , श्रुति-सुधा से है सनी ॥

सुश्रुत और चरक की वैद्य विद्या का लोहा सारा संसार मानता था ।अमर साहित्य के सृजक वाल्मीकि, वेदव्यास और कालिदास की रचनाओं ने संपूर्ण संसार के लोगों के ह्रदय को मुग्ध किया है । रामायण और महाभारत जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ संसार में अन्य कहाँ मिलेंगे । यद्यपि हमारे ग्रंथों को आततायियों ने अनेकों बार विध्वंस किया है तत्पश्चात भी हम अपने विश्वप्रसिद्ध साहित्य का कुछ संरक्षण कर पाए ।
कला कौशल, चित्रकला, मूर्ति कला, संगीत, अभिनय कला भारत की प्राचीन संपदा है । भरत मुनि का 'काव्य शास्त्र' अभिनय, नृत्य और कला के क्षेत्र की अनुपम कृति है । नवरसों का ज्ञान हमें यहीं से प्राप्त हुआ -

अभिनय कला के सूत्रधार भी आदि से आचार्य हैं ,
प्रकटे भरत-मुनि से यहाँ इस शास्त्र के आचार्य हैं ।
संसार में अब भी हमारी है अपूर्व शकुन्तला ,
है अन्य नाटक कौन उसका साम्य कर सकता भला ॥

भारत-भारती अपने वीरों का गुणगान करती है । वे कर्मवीर थे, युद्ध वीर थे, दानवीर थे और धर्मवीर थे | सूर्यवंशी और चंद्रवंशी चक्रवर्ती सम्राट 'अश्वमेघ' और 'राजसूय' यज्ञ करते थे । भीम से महाबली, अर्जुन से महारथी हमारे देश के उज्जवल रत्न थे । चंद्रगुप्त मौर्य सा सम्राट जिसके समक्ष विश्व-विजेता सिकंदर की भी नहीं चली । ऐसे शूरवीरों ने भारतभूमि को रत्नगर्भा बनाया, जिन्होंने शक्तिशाली होने पर भी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया -

"हम भूप होकर भी कभी होते न भोगासक्त थे"

भारत-भारती भारतीय सभ्यता संस्कृति के गुणगान की एक ऐसी खान है जिसमें से निकला एक-एक शब्द हीरे के समान और एक-एक भाव समुद्र से निकले मोती के समान है। कवि ने इन हीरों और मोतियों को एकत्र कर एक अद्वितीय, अम्लान हार माँ भारती के चरणों में समर्पित किया है ।

एक ओर जहाँ भारत की महिमा का गुणगान उसके गौरव का बखान करते हुए कवि ह्रदय गर्व और आनंद से भरपूर है दूसरी ओर अपने महान देश की वर्तमान दशा को देखकर उनका ह्रदय हा-हाकार कर रहा है । विदेशी आक्रमणों ने देश की गरिमा को खंडित किया, अनेकों वर्षों की दासता ने हमारे आत्मसम्मान को चूर-चूर कर दिया । हमें गुलामी में बांधकर यह सिखाया गया कि हमारे पास न विद्या है, न बुद्धि, न ज्ञान, न चेतना । हमें हमारी संस्कृति से दूर कर दिया गया । हमारे समाज का पतन होता गया । हमारी मर्यादा भंग हो गयी । हमारे नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन होता गया । हम स्वार्थ, अहंकार, मद और अश्लीलता को ही सब कुछ समझकर पतन के मार्ग की ओर अग्रसर होते रहे । हम दरिद्रता के शिकार बने, दुर्भिक्ष ने हमें घेरा, हमारी कृषि नष्ट होने लगी, हम विदेशी वस्तुओं को श्रेष्ठ समझने लगे । अविद्या ने हमें घेर लिया । निर्धन और धनवान के बीच की दूरी बढ़ने लगी । हमारी स्त्रियाँ अपने धर्म को भूल गईं । हमारी संतान आचरण हीन हो गई, हम अपनी गौरवशाली परंपरा को भूल गए । व्यभिचार और कलह हमारे आचरण का हिस्सा बन गए । हमारा समाज पतन की ओर अग्रसर होने लगा ।

ऐसे समय में हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम अपनी गौरवशाली परंपरा को याद करें । अपने पूर्वजों के बताए मार्ग पर चलें और पुनः उन्हीं आदर्शों की स्थापना कर अपनी सभ्यता और संस्कृति को पुनर्स्थापित कर अपने प्रिय भारतवर्ष को जगतगुरू के पद पर आरूढ़ करें । श्री मैथलीशरण जी की शब्दों में ईश्वर से यही प्रार्थना करते हुए मैं अपने विचारों को विराम प्रदान करती हूँ –

इस देश को हे दीनबंधो ! आप फिर अपनाइए,
भगवान ! भारतवर्ष को फिर पुण्यभूमि बनाइए ।
जड़तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है,
हेरम्ब ! अब अवलम्ब देकर विघ्नहर कहलाइए ॥

संदर्भ- १ भारतीय साहित्य का इतिहास---- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
२. हिंदी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में एक अवलोकन--- गुप्ता अरविंद कुमार
३. भारत-भारती--- मैथिलीशरण गुप्त

डा. शिखा तिवारी एम ए संस्कृत, एम ए हिन्दी, पी एच डी
प्रधानाचार्या टी जान कालेज
गोट्टीगेरे,बन्नारगट्टा रोड बैंगलोर
कर्नाटक 560083